मूलगुण एवं उपगुण के भेद का खंडन (Rejection of Primary and Secondary Qualities)

बर्कले लॉक के मूलगुण एवं उपगुण के भेद का खंडन करते हैं| उनके अनुसार मूलगुण और उपगुण का भेद अनुचित है| जॉन लॉक ने कहा कि मूलगुण द्रव्य की वास्तविक धर्म है जो उस में विद्यमान रहते हैं और जिनका कार्य इंद्रियों से संपर्क होने पर हमारे मन में संवेदना के माध्यम से अपने प्रतिबिंब के रूप में प्रत्यय उत्पन्न करने का है| इन मूल गुणों का दूसरा कार्य अपनी शक्ति से हमारी आत्मा में संवेदना के रूप में उपगुण उत्पन्न करने का है| उपगुण संवेदन रूप हैं और आत्मा में रहते हैं| मूल गुण बाह्य पदार्थ में रहते हैं और मन में केवल अपने प्रतिबिंब अंकित करते हैं| आकार, विस्तार , गति आदि मूल गुण हैं| रूप, रस, गंध आदि उपगुण| बर्कले का तर्क है कि मूलगुण एवं उपगुण में कोई भेद नहीं है| जैसे उपगुण मन में रहते हैं, वैसे ही मूल गुण भी आत्मा में रहते हैं| दोनों का अधिष्ठान मन है, दोनों मानसिक धर्म है| दोनों संवेदन मात्र हैं| दोनों ही इंद्रियों द्वारा ग्रह यह हैं| दोनों आत्मा में उत्पन्न होते हैं, दोनों प्रत्यय रूप हैं और दोनों की सत्ता मन पर निर्भर है| ठंडा या गर्म स्पर्श मानसिक है- एक ही वस्तु किसी को कम गरम और किसी को अधिक गर्म लगती है| बुखार में चीनी भी कड़वी लगती है| पीलिया के रोगी को सफेद वस्तु भी पीली दिखाई देती है| इसी प्रकार मूल गुण भी दृष्टा पर निर्भर हैं| विभिन्न दृष्टिकोण से देखने पर वस्तुओं का आकार और विस्तार भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं| एक ही वस्तु दूर से देखने पर छोटी और पास से देखने पर बड़ी लगती है| एक ही वस्तु सामने से देखने पर गोलाकार लगती है, बगल से देखने पर अंडाकार प्रतीत होती है| फिर मूलगुण और उपदगुण सदा साथ रहते हैं| उनको एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है| अतः सिद्ध है कि दोनों एक ही प्रकार के गुण हैं और मन में रहते हैं| इनका भेद काल्पनिक और अनुचित है| इसलिए इन मूल गुणों को बाह्य पदार्थों का वास्तविक धर्म मानना और उनके आधार पर बाह्य पदार्थों की सत्ता सिद्ध करना, दोनों ही बातें गलत हैं| नामक किसी द्रव्य में विश्वास करने का हमारे पास कोई आधार नहीं है और ना ही मूल गुण एवं उपगुण

बर्कले के अनुसार यदि सच्चे अर्थ में अनुभव को ही ज्ञान के साधन के रूप में लिया जाए तो " matter" नाम के किसी द्रव्य में विश्वास करने का हमारे पास कोई आधार नहीं है और ना ही मूलगुण और उप गुणों में भेद करने का कोई आधार हमारे पास है| अनुभव यदि ज्ञान का साधन है तो अनुभव हमें सिर्फ प्रत्ययों का होता है, इसलिए सिर्फ प्रत्यय ही वास्तविक हैं| उनके अथवा उनके बाह्य आधार के रूप में किसी जड़ द्रव्य को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है|